संस्कृत विभाग एवं राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संस्कृत संगोष्ठी

(दि. 7–8 नवम्बर 2014)

आधुनिक सन्दर्भ में भारतीय काव्यशास्त्र की समालोचना

विश्व वाङ्मय में गर्व करने योग्य विषयों में संस्कृत भाषा और उसका साहित्य प्रमुख है। संस्कृत भाषा भारत राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर है। जिसका समग्र साहित्य हमारी गौरवपूर्ण परम्पराओं का निदर्शन है। ऋचाओं से आरम्भ संस्कृत भाषा वर्तमान में विभिन्न विधाओं में पल्लवित–पुष्पित हुई है।

यह उल्लेखनीय है कि संस्कृत काव्यशास्त्रियों ने काव्य के सन्दर्भ में जो दृष्टिकोण अपनाया है, उसका केन्द्र सहृदय पाठक और श्रोता रहे हैं; जबकि पाश्चात्य आचार्यों और आधुनिक हिन्दी कवियों की दृष्टि कवि पर अधिक केन्द्रित रही है। पाश्चात्य काव्यशास्त्रियों ने कवि के भाव–स्मरण और जीवन की आलोचना आदि को काव्य कहा है। इसी परम्परा का अनुसरण करते हुए आधुनिक हिन्दी कवियों ने काव्य को संसार के प्रति कवि की भाव प्रधान मानसिक प्रतिक्रियाओं की कल्पना के ढांचे में ढली हुई प्रेम–रूपा प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति कहा है।

ध्यातव्य है कि काव्य की जो परिभाषाएँ संस्कृत काव्यशास्त्रियों ने दी हैं, उन्हीं के समीप या उनके किंचित् परिवर्तित स्वरूप को अंग्रेजी एवं हिन्दी काव्यशास्त्रियों ने काव्य–परिभाषा के रूप में स्वीकृति प्रदान की है।

आचार्य भरत द्वारा प्रतिपादित काव्य की सैद्धान्तिकी/मान्यताएँ अधुना यथावत् स्वीकृत होते हुए भी, समय–समय पर विभिन्न आचार्यों द्वारा परिवर्तित हुई हैं। काव्य की परिभाषा लिखने वाले आचार्यों के लक्षण–ग्रन्थों के नाम और उनमें प्रतिपादित काव्य विषयों के समरूपों में क्रमशः विकास हुआ। जिसकी वर्तमान संदर्भों में समालोचना अत्यावश्यक है। विगत दो सौ वर्षों से तो संस्कृत रचनाओं के स्वरूप एवं विचारधारा में जो परिवर्तन आया है, वह दर्शनीय है, साथ ही समीक्ष्य भी।

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में संस्कृत साहित्य एक नवीन परिवर्तित रूप हमारे सम्मुख उपस्थित होता है। उसके रूप में, काव्य की शैली, विषयवस्तु और काव्य–प्रयोजन की दृष्टि से एक अभूतपूर्व परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। इसकी लेखन पद्धति अधिक व्यापक और स्वाभाविकता की ओर उन्मुख हुई दिखाई पड़ती है। 20वीं सदी का कवि–हृदय समाज में व्याप्त विसंगतियों से आहत मानव समाज को देखकर द्रवीभूत है, उसकी वाणी ने श्रमिक के श्रम और उसकी पीड़ा को स्पष्ट रूप से उद्घाटित किया है।

आधुनिक रचनाओं में परम्परागत श्रृंगार और अभिसार से हटकर मानवीय सुख–दुःख, आशा–निराशा विशेषतः पुरुष प्रधान रूढ़िवादी भारतीय समाज में नारी एवं दलितों की दयनीय दशा एवं उनके जीवन संघर्ष का चित्रण किया है।

आयोज्यमान संगोष्ठी के मुख्य चिंतन का विषय भी यही है कि प्राचीन भारतीय काव्यशास्त्र की मान्यताएँ वर्तमान काल में कितनी प्रासंगिक हैं? ये मान्यताएँ कवि को बन्धन में बाँधती है अथवा ये सीमा निर्धारण का एक प्रकार है जिससे कवि की लेखनी विषयेतर न हो जाए। ऐसे अनेक प्रश्न आज उपस्थित है जो संस्कृत भाषा के काव्यकारों के सम्मुख है, साथ ही अंग्रेजी एवं हिन्दी भाषा के कवियों के अन्तःकरण में भी। भारतीय काव्यशास्त्र की वर्तमान में प्रासंगिकता को उक्त तीनों साहित्यों के संदर्भों में अवलोकित किया जाना है, इसकी ग्राह्यता एवं परिमार्जन के निर्धारक सुनिश्चित हो सकेंगे। जिससे वर्तमानकालीन कवि लाभान्वित होगा, उसकी लेखनी और प्रशस्त होगी। इसके साथ ही एक निश्चित भारतीय काव्यशास्त्र का उसे सम्बल भी प्राप्त होगा।

संगोष्ठी में निम्न बिन्दु चिन्तन का केन्द्र होंगें –

- मानविकी की आवश्यकता?
- साहित्य और लोकमंगल।
- मानव की संवेदनाएँ और साहित्य।
- समाज की चिन्ता का केन्द्र कविता में।
- साहित्य की पक्षधरता का प्रश्न।
- काव्यरूपों का विकास।
- तकनीक का प्रयोग।
- काव्य में धर्म/समाज का प्रभाव/राजनैतिक उपयोग/सत्ता के चरित्र से समझौता।
- काव्य क्यों?
  संस्कृत काव्य प्रयोजन। हिन्दी लोक मंगल/अंग्रेजी यूनानी परम्परा।
- काव्य हेतु? प्रतिभा, अभ्यास–लोकशास्त्र आदि का निरीक्षण : आधुनिक संदर्भ में।
- काव्य प्रयोजन।
  कान्तासम्मित उपदेश, अर्थप्राप्ति, लोक–हित, यशप्राप्ति, व्यवहारज्ञान, अमंगलनाश : आधुनिक संदर्भ में।
- रसानुभूति की प्रक्रिया–पारम्परिक एवं नव्य।
  शब्दशक्तियाँ एवं अभिव्यंजना प्रक्रिया, प्रतिभा, कविता–कला

विचारणीय बिन्दु

उद्घाटन सत्र

- संगोष्ठी का उद्घाटन एवं पंजीकरण दिनांक 07.11.2014 को संस्कृत विभाग, महर्षि बद्रीप्रसाद महर्षि संस्कृत एवं वैदिक अध्ययन संस्थान भवन, आई.सी.आई.सी.आई. बैंक के पीछे, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में होगा।

शोध–आलेख एवं संक्षिप्तिका

- शोध आलेख एवं सारांश कम्प्यूटर टंकित (A-4 page, double space Hindi font 16, English font-12 Times New Roman), हिन्दी फोंट Devlys 010/Krutidev 010 में एम.एस. वर्ड में दिनांक 27.09.2014 तक ई–मेल sanskritseminar2014@gmail.com पर या कोरियर/डाक द्वारा "संस्कृत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, आई.सी.आई.सी.आई. बैंक के पीछे, राजस्थान विश्वविद्यालय परिसर, जयपुर, राजस्थान पिन–302015" पर प्रेषित करें। शोधपत्र एवं सारांश पर लेखक का नाम–पता, पदनाम, मोबाईल नंबर व ई–मेल पूर्णतया स्पष्ट रूप से अंकित होना चाहिए।
- शोध–आलेख का सारांश अधिकतम 300 शब्दों में हो।
- निर्धारित तिथि (दि. 27.09.2014) के पश्चात् प्राप्त सारांश पर विचार नहीं किया जायेगा एवं प्रकाशन सम्भव नहीं होगा।
- दिनांक 25.10.2014 तक प्राप्त पूर्ण शोध–आलेख की समीक्षा रिव्यू कमेटी द्वारा की जायेगी जिसके संस्तुत करने पर ही पत्र का प्रस्तुतीकरण संभव होगा। इसकी सूचना यथासमय भेज दी जायेगी।

पंजीकरण

प्रतिभागिता हेतु पंजीकरण राशि

प्राध्यापक व अन्य प्रतिभागी	:	500/–
शोध छात्र–छात्राएँ	:	300/–

- पंजीयन कार्य दिनांक 07.10.2014 से (प्रातः 11.00 से मध्याह्न 3.00 तक) संस्कृत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान में होगा।
- पंजीकरण राशि नकद रूप से जमा होगी एवं अहस्तांतरणीय एवं पुनर्देय (रिफण्डेबल) नहीं होगी।
- आमन्त्रित अतिथियों तथा पंजीकृत प्रतिभागियों के लिए आवास व्यवस्था पूर्व में सूचना देने पर ही उपलब्ध हो सकेगी।

सम्पर्क सूत्र –

प्रो. बीना अग्रवाल	संयोजिका (09414442037)
डॉ. मदन लाल शर्मा	सह–संयोजक (08963040471)
डॉ. घनश्याम बैरवा	आयोजन सचिव (09413541947)
संस्कृत विभाग	0141–2711071 – एक्स. 2701, 2700
ईमेल	sanskritseminar2014@gmail.com

"आधुनिक सन्दर्भ में भारतीय काव्यशास्त्र की समालोचना"

NATIONAL SANSKRIT CONFERENCE

(7-8 NOVEMBER, 2014)

DEPARTMENT OF SANSKRIT, UNIVERSITY OF RAJASTHAN, JAIPUR

REGISTRATION FORM

Name of the participant: Prof./Dr./Ms./Mr. .....

Designation:.....Age :..... yrs. ..... Nationality:.....

Institution:.....

Full mailing address:.....

.....

.....Pin Code.....

Telephone No. (With STD/ISD Code):

Resi.....Office.....

Mobile.....Fax No.....E-mail.....

Local Contact Address and Local Phone No. (if available) .....

....

.....

Title of the research paper.....

.....

Date of Journey and Time .....

Residence Facility : Yes/No .....

Signature of Participant

Dated .....